इकाई 20 संचार के लिए लेखन

इकाई की रूपरेखा

20.0 उद्देश्य
20.1 प्रस्तावना
20.2 संचार माध्यमों का स्वरूप
  20.2.1 मुद्रित माध्यम
  20.2.2 श्रव्य माध्यम
  20.2.3 दृश्य माध्यम
20.3 संचार माध्यम की भाषा
  20.3.1 मुद्रित माध्यमों की भाषा
  20.3.2 श्रव्य माध्यमों की भाषा
  20.3.3 दृश्य माध्यमों की भाषा
20.4 संचार माध्यमों में भाषा का महत्व
20.5 संचार और शिल्प का भाषा पर प्रभाव
20.6 संचार के लिए लेखन
20.7 सारांश
20.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

20.0 उद्देश्य

संचार माध्यमों की भाषा से आप सभी थोड़ा बहुत परिचित होंगे। इस इकाई में हम उसी पर विचार करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- संचार माध्यमों का महत्व स्पष्ट कर सकेंगे,
- संचार माध्यमों के विभिन्न प्रकारों का विवरण दे सकेंगे,
- विभिन्न संचार माध्यमों की भाषा के बारे में जानकारी दे सकेंगे,
- संचार माध्यमों की भाषा का महत्व समझा सकेंगे,
- संचार माध्यम के लिए किए जाने वाले लेखन की विशेषताएँ बता सकेंगे।

20.1 प्रस्तावना

संचार के लिए लेखन की यह इकाई हिंदी में आधार पाठ्यक्रम-2 के चाथे खंड की दूसरी इकाई और पाठ्यक्रम की बीसवीं इकाई है। इस खंड मों आप लेखन संप्रेषण के बारे में अध्ययन कर रहे हैं। संचार आज के युग का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है। संचार के क्षेत्र में जो प्रौद्योगिकी विकसित हुई है उसके कारण लाखों-करोड़ों लोगें तक किसी बात को पहुँचाना इतना आसान हो गया है कि आज से दो सौ साल पहले इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। संचार की जरूरत तो हर युग में रहती है। भाषा एक तरह का संचार माध्यम ही है। जब हम किसी दूसरे व्यक्ति तक अपनी बात पहुँचाना चाहते हैं तो भाषा की ही मदद लेते हैं। दो व्यक्ति या दो से अधिक व्यक्ति अपनी बात को भाषा के माध्यम से ही एक दूसरे तक पहुँचाते हैं। भाषा का सबसे पहला प्रयोग बोलकर ही हुआ होगा। उसे लिखकर भी प्रयोग किया जा सकता है इस बात ने ही लिपि का आविष्कार करना संभव बनाया। लेकिन लिखने और बोले जाने के इस काम की भी समय और स्थान दोनों स्तरों पर सुरक्षित रखा जा सकता है, उसका पुनर्निर्माण किया जा सकता है, इस उपलब्धि ने संचार माध्यमों

को संभव बनाया। जब रेडियो का आविष्कार हुआ तो बोली जाने वाली भाषा उसी रूप में सुरक्षित रखकर उसे एक स्थान से दूसरे स्थान औ एक समय से दूसरे समय में यथावत् भेजना मुमकिन हो सका। इसी ने आधुनिक संचार माध्यमों को जन्म दिया। समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविज़न, सिनेमा आदि ने संचार की प्रक्रिया को इतना व्यापक बना दिया कि अब न सिर्फ मुद्रित रूप में बल्कि आवाज़ और दृश्य रूप में भी संदेशों को संप्रेषित किया जा सकता हे। कंप्यूटर ने हर तरह के संचार माध्यमों को एक ही स्थान पर उपलब्ध करा दिया है। संचार के क्षेत्र में जो क्रांतिकारी बदलाव हुए हैं उसने लेखन पर भी असर डाला है। यही नहीं इसने लेखन का एक नया क्षेत्र भी खोल दिया है।

इस इकाई में हम संचार के लिए लेखन के विभिन्न पहलुओं का परिचय प्राप्त करेंगे। संचार माध्यमों के लिए लेखन अत्यंत व्यापक विषय है और इसे एक इकाई में नहीं समेटा जा सकता। हम इस इकाई में अत्यंत संक्षेप में इसके विभिन्न पहलुओं का परिचय प्रस्तुत करेंगे। सबसे पहले आपको संचार माध्यमों के स्वरूप की जानकारी दी जाएगी। इसके बाद आप मुद्रित, श्रव्य और दृश्य माध्यमों के बारे में जानेंगे। बाद में आप इन अलग-अलग माध्यमों में भाषा के प्रयोग की विशिष्टताओं की जानकारी प्राप्त करेंगे। संचार माध्यमों में भाषा का क्या महत्व है और संचार के लिए लेखन के समय किन बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए, इस पर भी विचार किया गया है।

20.2 जनसंचार माध्यमों का स्वरूप

जनसंचार माध्यमों की भाषा के बारे में विचार करने से पहले यह जान लेना जरूरी है कि जनसंचार माध्यम क्या है। संचार का मतलब होता है, एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना। अगर कोई भी वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान जाती है या एक स्थान से दूसरे स्थान भेजी जाती है तो उसे संचार कह सकते हैं। संचार के ही साथ संप्रेषण शब्द का भी प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ भेजना होता है। लेकिन जब हम संचार माध्यमों के संदर्भ में संचार का प्रयोग करते हैं तब उसका अर्थ होता है किसी बात को या संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान भेजना। उदहारण के लिए समाचारपत्र में छपे समाचार ऐसे ही संदेश हैं जिन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान भेजा जाता है। यहाँ समाचार समाचारपत्र के जरिए भेजा जा रहा है, इसलिए समाचारपत्र वह माध्यम है जो समाचार रूपी संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाता है। इसी प्रकार यदि दूसरे शहर में रहने वाले अपने किसी संबंधी या मित्र को चिट्ठी लिखते हैं तो चिट्ठी भी उस संचार का माध्यम हुआ। लेकिन इन दोनों तरह के माध्यम में एक अंतर भी है। चिट्ठी से जो संदेश में भेजा जाता है, वह संदेश सिर्फ जिन्हें भेजा जा रहा है उसके लिए है, किसी ओर के लिए नहीं। यानी वह सार्वजनिक संदेश नहीं है। लेकिन जो समाचार समाचारपत्र में प्रकाशित हुआ है और लोगों तक पहुँचा है वह किसी एक के लिए नहीं है, वह उन सब के लिए है जो उस अखबार को पढ़ेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि चिट्ठी और अखबार दोनों संदेश भेजने के माध्यम होते हुए भी उनकी प्रकृति में अंतर है। एक व्यक्तिगत माध्यम है और दूसरा सार्वजनिक माध्यम। इस प्रकार जो माध्यम जनता के व्यापक हिस्से तक संदेशों का संचार करे उसे हम जनसंचार माध्यम कह सकते हैं और ऐसे संचार को जनसंचार। इस प्रकार समाचारपत्र एक जनसंचार माध्यम है। अब विचार कीजिए कि समाचारपत्र के अलावा ऐसे कौन से माध्यम हैं जिनको हम जनसंचार की श्रेणी में रख सकते हैं।

जनसंचार माध्यमों के संदर्भ में हमें इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि किसी संदेश का संचार किस प्रक्रिया द्वारा होता है। सबसे पहले तो कोई संदेश होगा जिसे लोगों तक पहुँचाना होगा। जो पहुँचाने वाला होगा (प्रेषक) वही संदेशों को पहुँचाने का काम करेगा। इस काम को अंजाम उस माध्यम के द्वारा दिया जाएगा जो उस संदेश

को उन तक पहुँचाएगा जो उसे प्राप्त करना (प्राप्तकर्ता) चाहेगा। इस प्रकार संचार की पूरी प्रक्रिया चार स्तरों पर घटित होती है।

1) संदेश को भेजने वाला अर्थात् प्रेषक
2) संदेश
3) संदेश जिसके जरिए भेजा जाएगा अर्थात् माध्यम
4) संदेश को प्राप्त करने वाला अर्थात् प्राप्तकर्ता

किसी भी तरह का संदेश क्यों न हो इन चार स्तरों से जरूर गुजरेगा। उदाहरण के लिए यदि दो व्यक्ति बात कर रहे हों तो आप देखेंगे कि वहाँ भी संचार की ये चार प्रक्रियाएँ जरूर घट रही होगी। जब एक व्यक्ति बोलेगा, तो वह संदेश का प्रेषक होगा, जो बात कहेगा वह संदेश होगा, बात जिस भाषा में कहेगा वह भाषा संदेश का माध्यम होगी और सुनने वाला उस संदेश का प्राप्तकर्ता होगा। जब दूसरा अपनी बात कहेगा तो वह अब संदेश का प्राप्तकर्ता नहीं बल्कि प्रेषक हो जाएगा और जो पहले प्रेषक था वह अब प्राप्तकर्ता हो जाएगा। आपसी बातचीत में यह प्रक्रिया लगातार चलती रहती है।

यहाँ आपक मन में यह सवाल जरूर उठा होगा कि हमने यहाँ भाषा को संदेश भेजने का माध्यम कहा है जबकि अखबार के संदर्भ में हमने समाचारपत्र को माध्यम कहा था। आपका सवाल सही है। भाषा भी माध्यम है और समाचारपत्र भी माध्यम है। समाचारपत्र में भी संदेश भाषा के माध्यम से भेजे जाते हैं। जब आप रेडियो पर समाचार सुनते हैं तो वहाँ भी आप तक संदेश भाषा के माध्यम से ही पहुँचता है लेकिन उस बोली जाने वाली भाषा को आप तक रेडियो ही लाता है इसलिए रेडियो उस संदेश का माध्यम हुआ। हाँ, हमें इन दो तरह के माध्यम के बीच अंतर करना होगा। आइए, इस पर विचार करें।

उस समय जब मनुष्य ने भाषा का निर्माण नहीं किया था तब भी एक मनुष्य को दूसरे से संवाद करने के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता जरूर रही होगी। तब उसके शारीरिक संकेत और मुंह से निकलने वाली विभिन्न तरह की ध्वनियाँ ही उसके लिए अपनी बात कहने का माध्यम रही होगी। धीरे-धीरे इन्हीं ध्वनियों को मनुष्य ने व्यवस्थित करना शुरू किया। अलग-अलग ध्वनियों को अलग-अलग अर्थ दिए और ऐसा करते हुए उसने भाषा के रूप में एक ऐसा माध्यम अर्जित कर लिया जिसके द्वारा वह दूसरे तक अपनी बात पहुँचा सकता था और दूसरे की बात समझ सकता था। इसी ध्वनियों पर आधारित भाषा के लिए मनुष्य ने लिपि की भी खोज की ताकि सिर्फ मुँह से बोलकर नहीं बल्कि लिखकर भी ऐसे लोगों तक अपना संदेश पहुँचा सके जो उनसे इतने दूर हैं कि जहाँ तक उनकी आवाज नहीं पहुंच सकती। लिपि के आविष्कार का लाभ यह भी हुआ कि अब एक काल की बात को दूसरे काल में भी सुरक्षित रखा जा सकता था। इस प्रकार भाषा संदेश के संप्रेषण का ऐसा माध्यम है जिसका इस्तेमाल सदियो से मनुष्य करता आ रहा है। लेकिन भाषा के पहले और समांतर भी कई अन्य रूप संदेश भेजने के मौजूद रहे हैं। मसलन, चित्र ऐसा ही एक माध्यम है जिसके द्वारा भी संदेश भेजे जा सकते हैं। शारीरिक संकेत भी संदेश के वाहक हो सकते हैं। जैसे हाथ के इशारे से जाने क लिए या आने के लिए कहना। गर्दन हिलाकर किसी बात की स्वीकृति देना या किसी बात के लिए इंकार करना। चेहरे पर आने वाले भाव भी संदेश के परिचायक होते है। व्यक्ति जब गुस्से में होता है तो उसके चेहरे के भाव वही नहीं होते जो खीझ में होते हैं या जो शर्मींदगी में होते हैं। इस प्रकार संदेश भेजने का एक तरीका नहीं हो सकता। टेलीविज़न और सिनेमा में हम दृश्यों से बहुत सारी बाते समझ जाते हैं। लेकिन इन सबके बावजूद हमें यह

स्वीकार करना होगा कि भाषा संदेश भेजने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण माध्यम है और जिन जनसंचार माध्यमों की चर्चा हम आगे करने जा रहे हैं उन सबमें भाषा का प्रयोग अवश्य होता है।

ऊपर जो बातें कहीं गई हैं उनसे कुछ बातें साफ हुई होगी। आपने देखा कि संदेश भेजने का माध्यम सिर्फ भाषा नहीं है और स्वयं भाषा को भी किसी न किसी सहारे की जरूरत होती है जब उसे समय और स्थान की दूर तय करनी होती है। वह लिपि होती है, वह कागज़ हो सकता है, वह रेडियो हो सकता है या और कोई यंत्र। अगर हम लिपि पर विचार करें तो हम इस बात को आसानी से समझ सकते है। जब हम कहते हैं : जनता तो हम **ज न** और **ता** का उच्चारण क्रम से करते हैं। यहाँ कई ध्वनियाँ हैं जिनका बोलने में प्रयोग किया गया है लेकिन जब हम **ज** शब्द बोलते हैं तो हमारे मुँह से एक खास तरह की ध्वनि निकलती है। इस ध्वनि के लिए हमने एक संकेत सीखा था जिसे यहाँ **ज** के रूप में लिखा गया है। अब जहाँ भी हम ज देखते हैं तो समझ जाते हैं कि यह **ज** नामक ध्वनि का संकेत है। इस प्रकार लिपि में हम ध्वनियों के लिए अलग-अलग संकेतों का प्रयोग करना सीखते हैं। जब हम किसी ऐसे व्यक्ति को जो नागरी लिपि से परिचित हैं और उसे हम कागज़ पर **जनता** लिखकर देते हैं तो हमारे बोले बिना वह पढ़कर जान सकता है कि यह **जनता** लिखा है। यह दस दिन बाद, साल भर बाद, और यहाँ या किसी भी जगह पढ़कर जान सकता है। इस प्रकार लिपि ने उस बात को स्थान और समय दोनों दृष्टियों से सुरक्षित रखना संभव बनाया। अब सवाल उपस्थित हुआ कि लिखा कहाँ जाए, कि लिखा हुआ आसानी से नष्ट न हो और लंबे समय तक उसे सुरक्षित रखा जा सके। यही नहीं उसे आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना भी मुमकिन हो सके। कागज़ का आविष्कार इसी जरूरत से हुआ था। बाद में प्रिंटिंग मशीनों का आविष्कार भी इसी वजह से हुआ। इस प्रकार संदेश का माध्यम भाषा होते हुए भी इस भाषा का वहन करने के लिए जो माध्यम आविष्कृत हुए उन्हें संचार माध्यम कहा गया। समाचारपत्र यदि लिखित भाषा के माध्यम से संदेशों को ले जाता है तो रेडियो बोली गई भाषा को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाता है। सिनेमा और टेलीविज़न न सिर्फ ध्वनियों को ले जाते हैं बल्कि वे दृश्यों को भी एक स्थान से दूसरे स्थान, एक समय से दूसरे समय में ले जाते हैं। अगर माध्यमों की प्रकृति के अनुसार जनसंचार माध्यमों का विभाजन किया जाए तो उन्हें हम तीन भागों में बाँट सकते हैं। मुद्रित माध्यम, श्रव्य माध्यम और दृश्य माध्यम। अब हम यहाँ तीनों माध्यमों की अलग-अलग चर्चा करेंगे।

20.2.1 मुद्रित माध्यम

मुद्रण के यंत्रों के आविष्कार ने यह संभव बनाया कि लिखित सामग्री को व्यापक जनता तक पहुँचाया जा सके। इसी वजह से अखबारों और पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ हुआ। अखबारों के प्रकाशन का उद्देश्य लोगों तक समाचारों को भेजना होता है। हम यहाँ इस बात की चर्चा नहीं करेंगे कि समाचारपत्रों के प्रकाशन के क्या-क्या कारण थे। लेकिन हमारे लिए यह जानना जरूरी है कि अखबार किन अर्थों में अन्य मुद्रित सामग्री से अलग होते हैं। जब हम अखबार कहते हैं तो इसका मतलब यह है कि वह या तो रोज़ाना प्रकाशित होता है या सप्ताह में एक दिन जरूर प्रकाशित होता है। दूसरी बात यह है कि इसमें समाचारों का प्रमुख स्थान होता है यह और बात है कि समाचारों के अलावा भी बहुत तरह की सामग्री उसमें हो सकती है। अब अगर हम रोज़ छपने वाले अखबार पर विचार करें तो इसका मतलब यह हुआ कि एक अखबार ज्यादा से ज्यादा चौबीस घंटे तक अपनी प्रासंगिकता रखता है। दूसरे रोज़ का अखबार आने से पहले ही पहले दिन का अखबार पुराना पड़ जाता है। तीसरी बात यह है कि अखबार में समाचारों की प्रमुखता होने के कारण मुख्य बल रोज़ाना घटने वाली घटनाओं को समाचारों के रूप में प्रस्तुत करने पर होता है। ये समाचार ऐसे रूप में

प्रस्तुत किए जाते हैं कि जो भी उस भाषा की सामान्य जानकारी रखता हो, वह उसे आसानी से समझ सके। अगर उसकी भाषा सामान्य लोगों की समझ में आने योग्य न हो तो अखबार के पाठक बहुत कम होंगे। यहाँ यह जरूर ध्यान रखना चाहिए कि अखबार सिर्फ उन लोगों क लिए ही उपयोगी है जो उस भाषा के लिखित रूप को पढ़ने और पढ़कर समझने की क्षमता रखता हो। जो व्यक्ति अनपढ़ है या उस भाषा के लिखित रूप को पढ़ नहीं सकता या पढ़कर समझ नहीं सकता तो उस व्यक्ति के लिए वह अखबार बेकार है। वह तभी उसके लिए उपयोगी हो सकता है जब कोई उसे पढ़कर सुनाए।

अखबार में समाचार के अलावा लेख, निबंध, कहानी, कविता, फीचर आदि कई विधाओं में रचनाएँ छपती हैं। जाहिर है कि अखबार का प्रसारण व्यापक होने के कारण इस बात का ध्यान रखा जाता है कि उसमें पाठकों की रुचि के अनुसार रचनाएँ प्रकाशित हों। अगर कोई पत्रिका जो बच्चों के लिए निकलती है तो उसमें सारी सामग्री बच्चों को ध्यान में रखकर ही तैयार की जाएगी जबकि अखबार में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि उसमें सभी उम्र, वर्ग, लिंग के पाठकों के लिए सामग्री हो।

20.2.2 श्रव्य माध्यम

रेडियो के आविष्कार ने आवाज़ को एक स्थान से दूसरे स्थान भेजना मुमकिन बनाया। रेडियो में आवाज़ को विद्युत तरंगों के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान भेजा जाता है। जहाँ से आवाज़ को भेजना होता है वहाँ आवाज़ ध्वनि तरंगों में परिवर्तित हो जाती है और जहाँ आवाज़ रूपी संदेश पहुँचना होता है वहाँ रेडियो नामक यंत्र उस ध्वनि तरंगों को दुबारा ध्वनि में बदल देता है। आवाज का यह संचार इतने कम समय में घटित होता है कि उसे लगभग हम शून्य मान सकते हैं। यानी जिस समय आवाज को प्रेषित किया जाता है, ठीक उसी समय वह हजारों मील दूर सुन ली जाती है। इस कारण से ही रेडियो को भी समाचार और दूसरे तरह के संदेशों के लिए प्रयोग किया जाता है। लेकिन रेडियो के साथ यह सीमा है कि वहाँ सिर्फ आवाज़ ही पहुँचती है और व्यक्ति को सुनकर कही गई बात को समझना होता है इसलिए भाषा का ऐसा होना जरूरी है जो सुनकर आसानी से समझी जा सके। लेकिन यह लाभ अवश्य है कि रेडियो उन लोगों क लिए भी उपयोगी माध्यम है जो उस भाषा को लिखना और पढ़ना भले ही न जानते हों लेकिन जो सुनकर समझ लेते हैं। इस प्रकार रेडियो की पहुँच अखबार की तुलना में कहीं ज्यादा व्यापक हो सकती है।

रेडियो पर सिर्फ समाचारों का प्रसारण नहीं होता। उस पर वार्ता, साक्षात्कार, गीत, संगीत, नाटक आदि कई विधाओं में सामग्री प्रसारित होती है। रेडियो को सिर्फ शिक्षित और शहरी लोग ही नहीं सुनते उसे गाँव में रहने वाले और अशिक्षित लोग भी सुनते हैं और उसका आनंद लेते हैं। महानगरों से गाँव तक, उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों से लेकर अशिक्षित लोगों तक सभी के लिए यह माध्यम उपलब्ध होने के कारण इस पर पेश होने वाली सामग्री में भी उतनी ही विविधता का होना जरूरी है। रेडियो के माध्यम की विशेषता यह है कि इसका आस्वादन सिर्फ सुनकर लिया जा सकता है इसलिए उस पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में यह विशेषता होनी चाहिए कि उसमें जो कुछ भी प्रसारित हो उसका पूरा आनंद सुनकर ग्रहण किया जा सके। अखबार, पत्रिका और किताब पढ़ते हुए यह सुविधा होती है कि अगर कहीं बात को समझने में कुछ कठिनाई आ रही है तो हम दोबारा, तिबारा पढ़कर उसका आनंद उठा सकते हैं। लेकिन रेडियो के साथ यह सुविधा नहीं होती वहां बोली गयी बात को एक बार में ही समझना होता है। अगर हम समझने से चूक जाते हैं तो हमें दुबारा सुनने का मौका रेड़ियो पर नहीं मिलता। इसी प्रकार रेडियो में उन बातों को वर्णन करना कठिन होता हैं जिन्हें देखकर ही समझा जा सकता है। जबकि अखबार या पत्रिका में उसका शब्दों

में वर्णन किया जा सकता है। रेडियो के माध्यम की विशेषताओं के बारे में इसी इकाई में हम आगे और अध्ययन करेंगे।

20.2.3 दृश्य माध्यम

जनसंचार माध्यमों का तीसरा रूप हमें दृश्य माध्यमों में देखने को मिलता है। दृश्य माध्यम के वैसे कई उदाहरण है, जैसे, नाटक, चित्र, मूर्तिकला, वास्तुकला, आदि और इनके माध्यम से हम कुछ न कुछ संप्रेषित कर सकते हैं। लेकिन यहाँ हम जिन माध्यमों की चर्चा करने जा रहे हैं उनमें प्रमुख हैं : सिनेमा और टेलीविज़न। वस्तुतः जनसंचार माध्यमों में इन्हीं दो दृश्य माध्यमों का प्रमुखता से उल्लेख होता है। सिनेमा लगभग एक सदी पुराना माध्यम है। फिल्म को देखने के लिए विशेष तौर पर बनाए गए थियेटर में जाना होता है, जहाँ बैठे दर्शक सामने लगे विशाल सफेद पर्दे पर प्रोजेक्टर द्वारा डाले गए बिंबों को देखते हैं। ये बिंब गतिशील होते हैं और ऐसा प्रतीत होता है मानो जीवन में जो कुछ घटित होता है उसे ही हम हुबहु पर्दे पर देख रहे हैं। टेलीविजन पर भी हम गतिशील बिंब को टेलीविज़न के स्क्रीन पर देखने हैं। लेकिन यहाँ दृश्य और आवाज दोनों रेडियो की तरह विद्युत तरंगों द्वारा पहुँचती है। टेलीविज़न पर दिखाए जाने वाले बिंब का आकार आमतौर पर 14 इंच से लेकर 29 इंच होता है जो कि टेलीविज़न के स्क्रीन का आकार होता है जबकि सिनेमा का पर्दा विशाल आकार का होता है और उस पर दिखाये जाने वाले बिंब मनुष्य के सामने आकार से काफी बड़े नज़र आते हैं। सिनेमा में भी दृश्यों के साथ आवाज़ का भी प्रयोग किया जाता है। लेकिन ये दोनों माध्यम दृश्य माध्यम इसलिए कहे जाते हैं क्योंकि इनमें दृश्य की प्रधानता होती है और आवाज़ की भूमिका अनुवर्ती होती है।

इन दोनों माध्यमों द्वारा भी कई तरह के कार्यक्रम दिखाए जा सकते हैं। लेकिन सिनेमा का प्रयोग आमतौर पर या तो कथात्मक फिल्मों के लिए होता है या वृत्त चित्रों के लिए होता है। जबकि टेलीविज़न पर कथात्मक फिल्मों के अलावा समाचार, वृत्त, चित्र, साक्षात्कार आदि कई तरह के कार्यक्रम दिखाए जा सकते हैं। सिनेमा पर दिखाए जाने वाली फिल्मों में कार्टुन फिल्मों के अलावा तरह-तरह की प्रयोगशील फिल्में भी हो सकती हैं। इसी तरह टेलीविज़न पर भी उन सब विधाओं को जिनका सिनेमा में प्रयोग होता है के अलावा कई दूसरे तरह के कार्यक्रम दिखाए जा सकते हैं। मसलन, टेलीविज़न पर खेलों का आँखों देखा हाल दिखाया जा सकता है। इन दोनों दृश्य माध्यमों की तकनीक आज काफी विकसित हो चुकी है। इसलिए इन माध्यमों में भाषा के प्रयोग में भी विविधिता और रचनात्मकता को देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न-1

1) निम्नलिखित में से जनसंचार माध्यमों की श्रेणी में किसे-किसे शामिल करेंगे?
   - क) ट्रेलीफोन
   - ख) टेलीविज़न
   - ग) पत्रिका
   - घ) तार

2. रेडियो और टेलीविज़न में मुख्य अंतर बताइए।

   .....

   .....

3. टेलीविज़न और सिनेमा के दो भेद बताइए।

   क)

   ख)

अभ्यास-1

1) निम्नलिखित अंश को पढ़कर बताइए कि यह भाषा किस संचार माध्यम के लिए उपयुक्त है और क्यों?

   तेरहवीं लोकसभा चुनी जा चुकी है। दावों प्रतिदावों की असलियत सामने आ चुकी है। पिछले चार साल में देश तीन लोकसभा चुनाव देख चुका है। अक्सर कहा जाता है कि खंडित जनादेश या त्रिशंकु लोकसभाएँ मतदाता की उदासीनता का नतीज़ा है। लेकिन क्या यह सच है? पिछले चुनावों के राज्यवार अध्ययन इसकी पुष्टि नहीं करते। उल्टे यह तथ्य छन कर आता है कि जिन राज्यों में साक्षरता का प्रतिशत बेहतर है वहाँ मतदान का प्रतिशत भी बेहतर है।

2) आकाशवाणी का कोई समाचार बुलेटिन ध्यान से सुनिए और उसमें प्रयुक्त भाषा की विशेषताएँ लिखिए।

3) निम्नलिखित संवाद की भाषा का विवेचन कर बताइए कि क्या यह दृश्य या श्रव्य माध्यम में संवाद के लिए उपयुक्त भाषा है? यदि नहीं तो क्यों? मेरा जीवन तो बड़े एक्सपैरीमेंटस और अदभुत प्रयोगों का जीवन रहा है न इसलिए मेरे हर चीज के विषय में अलग सिद्धात हैं। मेरा कहना तो यह है कि जब काम करने का निश्चय ही है तो उसमें चुनाव वाली चीज़ गलत है। जो सामने हो सो करो। चुनाव में वक्त बरबाद करने की जरूरत नहीं है। असल में जब आप चुनाव को महत्व देते हैं तो आपके मन की अनिश्चयात्मक स्थिति ही प्रकट होती है।

20.3 जनसंचार माध्यमों की भाषा

जनसंचार माध्यमों की भाषा से तात्पर्य यहाँ उसके माध्यम की विशिष्टता से नहीं है। मसलन, रेडियो का माध्यम ध्वनि है। अब यह ध्वनि किसी भी चीज़ की हो सकती है। चिड़िया के चहचहाने की आवाज, रेलगाड़ी के पुल पर से गुजरने की आवाज़, कुत्तों के भोंकने की आवाज आदि सभी तरह की ध्वनियाँ किसी न किसी अर्थ को व्यक्त करेंगी। यही नहीं पृष्ठभूमि में विशेष तरह के संगीत का बजना विशेष तरह की भावनाओं को जगाने में मदद कर सकता हे। ये सभी ध्वनियाँ रेडियो को संचार माध्यम के रूप में विशिष्ट बनाती हैं। इसी प्रकार बिना किसी तरह की भाषा का प्रयोग किए, सिनेमा और टेलीविज़न में दिखाए जाने वाले दृश्य बिंब दर्शकों तक अर्थ संप्रेषित करने में कामयाब होते हैं। अगर विचार करें तो सिनेमा और टेलीविज़न की भाषा का तात्पर्य उसके वे दृश्य बिंब हैं जिनमें ध्वनि भी संयोजित होती हे। इस प्रकार हम यहाँ भाषा पर विचार इस व्यापक अर्थ में नहीं करने जा रहे हैं बल्कि उसी अर्थ में जिसमें वह समाचारपत्रों, किताबों और हमारे रोज़मर्रा के जीवन में प्रयुक्त होती है।

यहाँ यह स्वाभाविक सवाल उत्पन्न होता है कि क्या इन सब माध्यमों में एक सी ही भाषा प्रयुक्त होती है या उसमें कुछ अंतर होता है इस बात का सवाल हाँ और नहीं दोनों में दिया जा सकता है। हाँ इस अर्थ में कि जिस हिंदी भाषा का प्रयोग हम अपने रोज़मर्रा के जीवन में करते हैं, उसे ही हम समाचारपत्रों, पत्रिकाओं और किताबों में पढ़ते हैं। उसे ही हम रेडियो पर सुनते हैं और उसे ही हम फिल्म और टेलीविज़न पर भी सुनते हैं। अगर यह एक सी हिंदी नहीं होती तो किसी भी हिंदी जानने वाले के

लिए अलग-अलग माध्यमों में इस्तेमाल होने वाली भाषा को समझना मुश्किल हो जाता। लेकिन इसका यह अर्थ भी नहीं है कि इन सभी माध्यमों में एक-सी हिंदी प्रयुक्त होती है। मैं रोज़ाना बोलचाल में जिस तरह की भाषा का प्रयोग करता हूँ वैसी ही भाषा कक्षा में पढ़ाते हुए नहीं करता। इसी प्रकार जो भाषा समाचारपत्रों में इस्तेमाल होती है, वैसी ही भाषा का प्रयोग रेडियो पर नहीं किया जा सकता। उसमें अंतर जरूर होता है। यही बात दृश्य माध्यमों पर भी लागू होती है। भाषा में यह अंतर माध्यम की विशिष्टता के कारण आता है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि एक माध्यम में एक ही तरह की भाषा का प्रयोग होता है। एक ही माध्यम में अलग-अलग विधाओं में भाषा का स्वरूप अलग-अलग होता है। भाषा के इन अलग-अलग रूपों को पहचानना जरूरी है। इससे हम यह समझ सकते हैं कि संचार के विभिन्न माध्यमों में किस तरह की भाषा का प्रयोग होता है।

20.3.1 मुद्रित माध्यमों की भाषा

मुद्रित माध्यमों की भाषा पर विचार करने के लिए हमें इनमें प्रयुक्त भाषा के उदाहरणों को सामने रखना होगा। उदाहरण के लिए हम यहाँ एक छोटा उद्धरण दे रहे हैं, इसे ध्यान से पढ़िएः

> चुनाव आयोग की ओर से कल तेरहवीं लोकसभा के गठन की अधिसूचना राष्ट्रपति को सौंपे जाने के साथ ही नई लोकसभा का विधिवत गठन हो जाएगा। इसके साथ ही राष्ट्रपति नई सरकार के गठन की प्रक्रिया शुरू करेंगे।
>
> मुख्य चुनाव आयुक्त डॉ0 एम.एस. गिल और जे.एम. लिंगदोह नई लोकसभा के 537 निर्वाचित सदस्यों की सूची राष्ट्रपति को सौपेंगे। इसमें सदस्यों की पार्टी का नाम होगा। अधिसूचना में दोनों चुनाव आयुक्तों के हस्ताक्षर होंगे। यह पहली बार है कि नई लोकसभा गठन की प्रक्रिया को तीन चुनाव आयुक्तों के हस्ताक्षर से शरू होने के बाद इसका समापन दो चुनाव आयुक्तों के हस्ताक्षर से हो रहा है। तीन सदस्यीय चुनाव आयोग के तीसरे सदस्य जीवी कृष्णमूर्ति चुनाव प्रक्रिया के बीच में ही 30 सितंबर को रिटायर हो गए थे।

अब हम दूसरा उदाहरण दे रहे हैं। यह भी मुद्रित माध्यम का ही है :

> लिफाफा देखकर खत का मजमून भांप लेने की बात आमतौर से कही जाती है। मगर कई मजमून इतने गहरे, संजीदगी से भरे होते हैं कि उनकी ठीक-ठीक कैफियत लिफाफे की शक्लो-सूरत नहीं दे पाती। मसलन, जैसे कि यह किताब। इसका नाम है **रात भारी है** और इस पर लेखक की जगह नाम छपा है अमृता प्रीतम का। अमृता जी को कलम से खेलते हुए कोई आधी सदी का अरसा हो रहा है। वे कृश्नचंदर, साहिर लुध्यानवी, देवेंद्र सत्यार्थी, हंसराज रहबर के साथ की लेखिका है। उनकी पहचान पंजाबी लेखिका के बतौर है, लेकिन देखा अक्सर यह गया है कि उनकी कई कृतियाँ, लिखे जाने के बाद पंजाबी में बाद में छपी या नहीं भी छपी, लेकिन हिंदी में पहले छपकर आ गई। इस तरह उनका एक पाठक वर्ग हिंदी में भी निरंतर फलता-फूलता रहा है। .....

अब आप स्वयं दोनों उद्धरणों की भाषा की तुलना कर सकते हैं। यह तो आप समझ गए होंगे कि पहला उद्धरण समाचार का है और दूसरा पुस्तक समीक्षा का। समाचार की भाषा में आप पाएँगे कि सूचना का प्राबल्य है जबकि पुस्तक समीक्षा में सूचना के साथ लेखक का अपना मत भी। बल्कि वहाँ लेखक के अपने विचारों का ज्यादा महत्व है। जब समाचार में यह कहा गया कि, चुनाव आयोग की ओर से कल तेरहवीं लोकसभा के गठन की अधिसूचना राष्ट्रपति को सौंपे जाने के साथ ही नई लोकसभा का विधिवत गठन हो जाएगा। इसके साथ ही राष्ट्रपति नई सरकार के गठन की

प्रक्रिया शुरू करेंगे। तो हमें सिर्फ एक सूचना मिलती है। इसलिए आप यह भी देखते हैं कि यह भाषा वस्तुपरकता और तथ्यात्मकता के अनुकूल है और हम यह नहीं कह सकते कि इसमें लेखक की अपनी शैली का प्रभाव है। जबकि दूसरे उद्धरण में तथ्य पर उतना बल नहीं है जितना लेखक का अपनी बात कहने पर। यहाँ हम लेखक की भाषा का असर भी देख सकते हैं : लिफाफा देखकर खत का मजमून भांप लेने की बात आमतौर से कही जाती है। मगर कई मजमून इतने गहरे, संजीदगी से भरे होते हैं कि उनकी ठीक-ठीक कैफियत लिफाफे की शक्लो-सूरत नहीं दे पाती।
यहाँ एक ही भाषा हिंदी का प्रयोग है और दोनों उद्धरण मुद्रित माध्यम यानी समाचारपत्र से लिए गए हैं। यह दोनों उद्धरण एक ही दिन के एक ही अखबार से लिए गए हैं। इसके बावजूद आप दोनों की भाषा के अंतर को आसानी से पहचान सकते हैं। आप आसानी से समझ सकते हैं कि संदेश को संप्रेषित करने का तरीका दोनों जगह अलग-अलग है। समाचार में भाषा का प्रयोग बिल्कुल भिन्न ढंग से किया गया है। हम समाचार के एक और उदहारण से इसे समझ सकते हैं।

भारतीय मूल के अमरीकन प्लास्टिक सर्जन शरद कुमार दीक्षित नोबेल पुरस्कार की दौड़ में फिर शामिल है। इस पुरस्कार के लिए उनका नाम भी भेजा गया है। उन्होंने भारत के गरीबों के विकृत चेहरों को ठीक करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है।

आपने महसूस किया होगा कि पहले के समाचार और इस समाचार की भाषा में काफी हद तक समानता है। दोनों में ही सूचना के संप्रेषण पर बल है। यही कारण है कि यहाँ भी भाषा में वस्तुपरकता और तथ्यपरकता दोनों को शामिल किया गया है। एक और बात आपने नोट की होगी कि समाचार की भाषा में बात को स्पष्ट और सरल ढंग से कहने पर जोर है। क्लिष्ट और आलंकारिक ढंग से कहने से बचा गया है। अब हम इसी तरह एक और उदाहरण पुस्तक समीक्षा का लेते हैं।

कबीर के अलोचक धर्मवीर की पूर्वग्रह भरी आलोचना दृष्टि का नमूना हे। वरना वे हिंदी के शीर्षस्थ आलोचकों, रामचंद्र शुक्ल और हजारीप्रसाद द्विवेदी की नीयत पर इतने शंकालू न होते कि इन्हें कबीर के आलोचक मानने की बजाय कबीर का शत्रु मान लेते।

यहाँ फिर आप देखेंगे कि लेखक के अपने विचारों को पेश करने पर बल है। साथ ही लिखने वाले के लेखन की शैली का अपना अंदाज भी हमें देखने को मिलता है। पुस्तक समीक्षा के इन दोनों उदाहरणों को समाचारपत्र से लिया गया है इसलिए इनमें विचार अधिक जटिल और गहन रूप में व्यक्त नहीं किए गए हैं। भाषा को भी जितना संभव हुआ है सरल और सहज बनाए रखा गया है जबकि अगर हम किसी ऐसी पुस्तक की भाषा से तुलना करें जो उच्च अध्ययन प्राप्त करने वाले लोगों को ध्यान में रखकर लिखी गई हैं तो उसकी भाषा समाचारपत्र की भाषा से अधिक जटिल और गहन होगी।

प्रत्येक जातीय समुदाय की अपनी लंबी सांस्कृति परंपरा होती है। उसी परंपरा से उसकी संस्कृति का विशिष्ट स्वरूप बनता है। लेकिन यह निर्माण न तो एकाकी रूप में होता है, न ही एक आयामी रूप में। यह उस समुदाय के सामूहिक प्रयत्नों की अभिव्यक्ति है जो स्वयं निरंतर विकसित होती हुई संस्कृति को भी विकसित करती है। लेकिन ऐसा करते हुए वह दूसरे जातीय समुदायों के संपर्क में भी आती है और इस प्रक्रिया में उनसे रिश्ता बनाते हुए अपनी संस्कृति में उनके प्रभावों को ग्रहण करती है और उन समुदायों पर अपना प्रभाव भी छोड़ती है। संस्कृति निर्माण की प्रक्रिया सतत प्रवाहमान प्रकिया है जिसमें वह निरंतर कुछ पुराना छोड़ती और नया ग्रहण करती हुई चलती है।

यह एक पुस्तक के एक अध्याय से ली गई भाषा है। यहाँ भाषा की जटिलता का कारण वह संदेश है जो व्यक्त हो रहा है। यहाँ संदेश न तो सूचना है और न ही सरल ढंग से पेश किया गया लेखकीय दृष्टिकोण। यहाँ संस्कृति की जटिल संकल्पना को प्रस्तुत किया गया है यही कारण है कि कुछ खास शब्दों और पदों का प्रयोग किया गया है, जिनकी व्याख्या अपेक्षित हो सकती है। मसलन, जातीय समुदाय, सांस्कृतिक परंपरा, समुदाय के सामूहिक प्रयत्नों की अभिव्यक्ति या संस्कृति निर्माण की सतत् प्रवाहमान प्रक्रिया आदि। कह सकते हैं कि समाचार पत्रों की भाषा में इस बात का ध्यान रखना जरूरी होता है कि उसे पाठकों का विशाल वर्ग पढ़ता है जिसमें भाषा, ज्ञान, अभिरूचि और संस्कारों के विभिन्न स्तर होते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए समाचार की भाषा को किसी एक तरह के वर्ग के अनुरूप नहीं बनाया जा सकता। यह जरूर है कि स्वयं समाचारपत्र में तरह-तरह की सामग्री की भाषा में भी विविधता होती है और होनी चाहिए।

20.3.2 श्रव्य माध्यमों की भाषा

श्रव्य माध्यमों का मतलब जैसा कि हम पहले कह चुके हैं वे माध्यम जिसमें संदेश को सुनकर समझना होता है। इसके अंर्तगत रेडियो को शामिल किया जाता है। वैसे तो आजकल ऑडियो कैसेट, ऑडियो सीडी आदि को भी शामिल किया जाता है। लेकिन हम यहाँ मुख्य रूप से रेडियो की ही चर्चा करेंगे। रेडियो ऐसा श्रव्या माध्यम है जिसमें संदेश हम सुनकर प्राप्त करते हैं। यह समाचार हो सकता है, वार्ता हो सकती है, नाटक हो सकता है। साक्षात्कार या बातचीत हो सकती है। इसके अलावा गीत, संगीत के कार्यक्रम हो सकते हैं। इन सबमें भाषा का एक-सा रूप इस्तेमाल नहीं होता। रेडियो पर जब हम समाचार सुनते हैं तो यह जरूरी हो जाता है कि बात को सुनने के साथ-साथ समझते जाएं। ऊपर हमने किताब का जो अंश उद्धृत किया है यदि उसे रेडियो से प्रसारित किया जाए तो उसे समझने में कठिनाई नहीं होगी? किताब पढ़ते हुए यह आसानी होती है कि हम अपने पढ़ने की गति को, समझने की अपनी क्षमता के अनुसार कम-ज्यादा कर सकते हैं, और न समझ आने पर दोबारा पढ़ कर समझने का प्रयत्न कर सकते हैं। लेकिन रेडियो पर ऐसा नहीं कर सकते। वहाँ बोलने वाले की गति तो स्थिर होती है लेकिन समझने की क्षमता एक सी हो यह जरूरी नहीं है। इसलिए रेडियो पर समाचार की भाषा का ऐसा होना जरूरी है जिसे सुनकर समझा जा सके। ऊपर हमने दो समाचार समाचारपत्र से उद्धृत किये थे। क्या उनको इसी रूप में रेडियो से प्रसारित किया जा सकता है?

चुनाव आयोग की ओर से कल तेरहवीं लोकसभा के गठन की अधिसूचना राष्ट्रपति को सौंपे जाने के साथ् ही नई लोकसभा का विधिवत गठन हो जाएगा। इसके साथ ही राष्ट्रपति नई सरकार के गठन की प्रक्रिया शुरू करेंगे।

मुख्य चुनाव आयुक्त डॉ. एम. एस. गिल और जे. एम. लिंगदोह नई लोकसभा के 537 निर्वाचित सदस्यों की सूची राष्ट्रपति को सौपेंगे। इसमें सदस्यों की पार्टी का नाम होगा। अधिसूचना में दोनो चुनाव आयुक्तों के हस्ताक्षर होंगे। यह पहली बार है कि नई लोकसभा गठन की प्रक्रिया को तीन चुनाव आयुक्तों के हस्ताक्षर से शुरू होने के बाद इसका समापन दो चुनाव आयुक्तों के हस्ताक्षर से हो रहा है। तीन सदस्यीय चुनाव आयोग के तीसरे सदस्य जीवी कृष्णमूर्ति चुनाव प्रक्रिया के बीच में हीं 30 सितंबर को रिटायर हो गए थे।

यही समाचार जब रेडियो से प्रसारित हुआ तो उसका स्वरूप कुछ इस तरह था:

> *तेरहवीं लोकसभा के गठन की अधिसूचना कल जारी होगी। कल ही मुख्य चुनाव आयुक्त राष्ट्रपति को निर्वाचित सदस्यों की सूची राष्ट्रपति को सौपेंगे।*

इस सूची में लोकसभा के लिए चुने गए कुल पांच सौ सैंतीस सदस्यों का नाम होगा। इसके साथ ही उनके निर्वाचन क्षेत्र और पार्टी का भी उल्लेख होगा। इस अधिसूचना के साथ तेरहवीं लोकसभा के गठन की प्रक्रिया पूरी हो जाएगी। उम्मीद की जाती है कि नया मंत्रिमंडल बुधवार तक शपथ ग्रहण करेगा।

आप देखेंगे कि रेडियो से प्रसारित होने वाले इस समाचार में और अखबार में प्रकाशित समाचार में सूचना की दृष्टि से ज्याद अंतर नहीं है। हां, कुछ सूचनाएं दोनों जगह अतिरिक्त हैं। लेकिन जो सूचनाएं दोनों में समान हैं उनमें तथ्यों की दृष्टि से कोई अंतर नहीं है। खास बात जो ध्यान देने की है वह यह कि भाषा के स्तर पर दोनों जगह दो तरह की भाषा का इस्तेमाल किया गया है। अखबार में छपे समाचार मे पहले वाक्य में जो बात कही गई है वही बात रेडियो से प्रसारित समाचार में भी कही गई है लेकिन उसे यथावत नहीं दोहराया गया है। अखबार का पहला वाक्य इस तरह हैः चुनाव आयोग की ओर से कल तेरहवीं लोकसभा के गठन की अधिसूचना राष्ट्रपति को सौंपे जाने के साथ ही नई लोकसभा का विधिवत गठन हो जाएगा। जबकि यही बाता रेडियो में इस तरह कही गई हैः तेरहवीं लोकसभा के गठन की अधिसूचना कल जारी होगी। कल ही मुख्य चुनाव आयुक्त राष्ट्रपति को निर्वाचित सदस्यों की सूची राष्ट्रपति को सौपेंगे। आप देखेंगे कि जो बात एक वाक्य में अखबार में छपी है वही बात यहां दो वाक्यों में है। लेकिन इन दो वाक्यों में भी अखबार के वाक्य में कही गई सभी बातें शामिल नहीं हुई है। दूसरी बात यह है कि रेडियो से प्रसारित समाचार के वाक्य छोटे हैं जबकि अखबार के वाक्य लंबे हैं। हालांकि दोनों जगह बातें सुलझे हुए और सरल ढंग से रखी गई हैं।

रेडियो पर प्रसारित होने वाले समाचर में इस बात का ध्यान रखना होता है कि वाक्य छोटे हों और उसमें ऐसे शब्दों का इस्तेमाल न हो जिसे पढ़ने में दिक्कत आए। यह बात भी जानना जरूरी है कि रेडियो पर जो समाचार प्रसारित होते हैं वे भी पहले लिखे जाते हैं लेकिन इस ढंग से मानो उन्हें लिखित रूप में पढ़ने के लिए नहीं लिखा गया है। इसका कारण यह है कि रेडियो पर समाचारों को सुनने वाले लोगों में अखबार पढ़ने वाले लोगों से ज्यादा व्यापकता होती है। हिन्दी के संदर्भ में तो यह भी है कि इनमें वे लोग भी हो सकते हैं जो निरक्षर हैं। इसलिए यह जरूरी है कि भाषा को सरल और सहज संप्रेष्य बनाया जाए। उदाहरण के लिए इस वाक्य को देखें। क्या इसे इसी रूप में रेडियो के समाचार का हिस्सा बनाया जा सकता है?

*भारत की जनसंख्या जो आज **985483487** है, जितनी तीव्र गति से बढ़ रही है उससे प्रतीत होता है कि यह समस्या एक दिन इतना विकराल रूप धारण कर लेगी कि **अंततोगत्वा हम पूर्णतः किंकर्तव्यविमूढ** हो जायेंगे और हम संकट के **गह्वर में शीर्ष** तक डूब जायेंगे।*

यह वाक्य रेडियो ही नहीं समाचारपत्र के लिए भी उपयुक्त नहीं है। सबसे पहली बात तो यह बहुत लंबा वाक्य है। अगर इतने लंबे वाक्य को हम सुनेंगे तो वाक्य समाप्त होने तक हम भूल जायेंगे कि इसमें ठीक-ठीक कहा क्या गया है। दूसरी बात यह कि इसमें ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है जिसका उच्चारण करने में कठिनाई आ सकती है। मसलन, अंततोगत्वा, पूर्णतः, किंकर्तव्यविमूढ़, गह्वर, शीर्ष आदि। तीसरी बात यह है कि इनमें से कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनका अर्थ सामान्य हिंदी का ज्ञान रखने वाले नहीं जानते। मसलन, अंततोगत्वा, किंकर्तव्यविमूढ़, गह्वर आदि। चौथी बात यह है कि इसमें भारत की जनसंख्या का उल्लेख जिस रूप में किया गया है उसे पढ़ना आसान नहीं है। समाचारवाचक देखकर यह नहीं बता सकता कि यह कितनी संख्या है उसे पहले हिसाब लगाना होगा। इसलिए रेडियो पर समाचारों में संख्याओं को अंकों में नहीं बल्कि शब्दों में लिखा जाता है : अठानवे करोड़ चौवन लाख तिरासी

हज़ार चार सौ सतासी। लेकिन इतनी बड़ी संख्या को यदि इस रूप में रेडियो पर पेश किया जाता है तो भी सुनने वाले को कठिनाई होती है। अगर आपने ध्यान दिया हो तो हमने चुनाव संबंधी जिस समाचार का उल्लेख किया था उसमें लोकसभा के सदस्यों की संख्या का उल्लेख एक स्थान पर अंक में और दूसरे स्थान पर शब्द में किया गया है। अंक में उल्लेख अखबार में है जबकि शब्द में उल्लेख रेडियो समाचार में है। पाँच सौ सैंतीस की संख्या ज्यादा बड़ी नहीं है उसे कोई भी याद रख सकता है। लेकिन जनसंख्या में जो संख्या दी गई है, वह इतनी बड़ी है कि उसे याद रखना किसी के लिए भी मुश्किल हो सकती है। इसलिए ऐसी संख्या को रेडियो पर इस रूप में कहा जाता है - अठानवे करोड़ से ज्यादा या अठानवे करोड़ पचास लाख से ज्यादा। यानी कि संख्या को इतना सरल बना दिया जाता है कि उसे सुनकर समझा जा सके। ऐसा करते हुए जाहिर है कि तथ्य को पूरी तरह से सही रूप में पेश नहीं किया जा सकता। लेकिन जो संख्या रेडियो पर बताई जाती है वह तथ्य के नज़दीक होती है और यदि किसी को पूरी और तथ्यपरक संख्या जानना है तो वह समाचार-पत्र से प्राप्त कर सकता है। अब हम इस समाचार को रेडियो के अनुसार ढालने की कोशिश करते हैं -

> *भारत की जनसंख्या तेज़ी से बढ़ रही है। यह अठानवे करोड़ से ज्यादा हो गई है। अगर जनसंख्या में इसी तरह बढ़ोत्तरी होती रही तो हमारा देश गहरे संकट में फंस सकता है।*

आपने देखा होगा कि समाचार के इस रूप में वे सभी बातें आ गई हैं जो कही गई थीं। लेकिन अनावश्यक या दोहराई गई बातों को छोड़ भी दिया गया है। कोई ऐसा कठिन शब्द नहीं है जिसे समझने में दिक्कत हो। संख्या को भी इस रूप में प्रस्तुत कर दिया गया है कि उसे पढ़े जाने पर कोई भी समझ सकता है। एक ही लंबे वाक्य की जगह तीन छोटे वाक्य बना दिए गए हैं।

रेडियो पर सिर्फ समाचार ही प्रसारित नहीं होते दूसरी कई विधाओं में भी संदेश प्रसारित होते हैं। इनमें सबसे प्रमुख है - रेडियो नाटक। नाटक की विधा मूल रूप में दृश्य विधा मानी जाती रही है। नाटक को मंच पर या खुले आँगन में खेला जाता है। लेकिन रेडियो नाटक रेडियो पर खेला जाता है। वहाँ विभिन्न पात्र उसी तरह आपस में संवाद करते हैं जिस तरह मंच पर करते हैं। रेडियो पर भी वैसे ही घटनाएँ घटित होती हैं जिस तरह मंच पर घटित होती हैं। फर्क सिर्फ इतना होता है कि मंच पर जिसे देखा जाता है उसे हम रेडियो पर सुनते हैं। रेडियो पर सुनते हुए ही हम उसकी कल्पना इस रूप में करते हैं मानो वह हमारे सामने घटित हो रही है। मसलन, दो व्यक्ति एक कमरे में बात कर रहे हैं। हम उनकी बात सुन रहे हैं। उनकी बातों में ही यह संकेत दे दिया गया है कि वे एक कमरे में बात कर रहे हैं। उनकी बातों के दौरान ही कोई तेज़ कदमों से प्रवेश करता है। यह पता हमें कदमों की आवाज़ से लगता है। जो तेज़ी के साथ दूर से नज़दीक आ रही है। उसको देखकर बात करने वाला व्यक्ति बोलता है - मोहन तुम? इस वाक्य से हमें यह जानकारी मिल जाती है कि आने वाला व्यक्ति मोहन है। तुम? कहने में जो आश्चर्य झलक रहा है उससे हमें यह आभास हो जाता है कि पूछने वाले व्यक्ति को इस बात की आशा नहीं थी कि मोहन यहाँ आएगा।

ऊपर के उदाहरण में हमने देखा कि रेडियो नाटक में तेज़ कदमों की आवाज़ के द्वारा हमें यह आभास दिया गया कि कोई आ रहा है। इसी तरह से, उन ध्वनियों का इस्तेमाल करके जिनसे हर व्यक्ति परिचित होता है हम लोगों तक यह सूचना पहुँचा देते हैं जिन्हें हम लिखित नाटक में वर्णन के रूप में पढ़ते हैं और मंचित नाटक में अभिनय के द्वारा देखते हैं। रेडियो नाटक में प्रमुखता संवादों की ही होती है। लेकिन अन्य ध्वनियों और संगीत का इस्तेमाल करके वह असर पैदा किया जाता है जो मंच

पर नाटक देखते हुए पैसा होता है। खास बात यह है कि रेडियो में बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाता है। लेकिन इस बोलचाल की भाषा को विधाओं के अनुसार अलग-अलग रूप देना होता है।

20.3.3 दृश्य माध्यमों की भाषा

संचार माध्यमों में मुद्रित और श्रव्य माध्यमों के अलावा दृश्य माध्यमों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। दृश्य माध्यम का यह अर्थ नहीं है कि इनमें श्रव्य का प्रयोग नहीं होता। सिनेमा हो या टेलीविज़न दोनों में दृश्य के साथ-साथ श्रव्य भी होता है। लेकिन दृश्य होने के कारण श्रव्य का इस्तेमाल उसी रूप में नहीं हो सकता जैसा कि रेडियो या मुद्रण में होता है। इसका सबसे उत्तम उदाहरण खेलों का आँखों देखा हाल है। अगर आपने क्रिकेट या हॉकी की कमेंट्री रेडियो और टी.वी. दोनों पर सुनी हो तो आपको इसका अंतर साफ महसूस हो गया होगा। हॉकी की कमेंट्री जब रेडियो पर सुनते हैं तो हमें कमेंट्री से ही मालूम होता है कि खेल कैसा चल रहा है। हम रेडियो पर खेल होता हुआ नहीं देखते। कमेंटटेर हमें छोटी-छोटी बातों का वर्णन देता चलता है। उसके बोलने की गति भी काफी तेज़ होती है क्योंकि खेल काफी तेज़ चलता है और गेंद एक खिलाड़ी से दूसरे खिलाड़ी तक तेज़ी से आती-जाती है जबकि टेलीविज़न पर कमेंट्री इतनी तीव्र गति से नहीं सुनाई देती क्योंकि टी.वी. पर खेल कैसा चल रहा है, हम देख रहे होते हैं। कमेंट्री सुनाने वाले के लिए यह जरूरी नहीं कि वह खेल के हर क्षण का पूरा विवरण पेश करे। वह खेल का वर्णन करने के बजाय उसपर अपनी राय ज्यादा ज़ाहिर करता है।

दृश्य माध्यमों में दृश्य साथ में होने के कारण शब्दों के द्वारा वस्तु, स्थिति और भाव का वैसा वर्णन करने की जरूरत नहीं होती जैसी मुद्रित या श्रव्य माध्यमों में होती है। दृश्य माध्यम में हम उसे वैसे ही देखते हैं जैसे जीवन में अपनी आँखों से देखते हैं। नीचे हम एक कहानी का अंश दे रहे हैं, इसे पढ़कर हम जान सकते हैं कि दृश्य माध्यम में इस तरह के विवरण की आवश्यकता नहीं होती।

> पैसा लेकर ऑफिस से बाहर निकलने पर उसने पाया कि आसमान पर काले-काले डरावने बादल छाये हुए हैं और हल्की बूँदा-बाँदी हो रही है। उसने इधर-उधर देखा। कोई उसके घर की तरफ जाने वाला मिल जाए तो वह इस बूँदा-बाँदी में भी निकल जाए। लेकिन साथी तो कोई नहीं दिखा, दिखे वे डरावने गिद्ध जो आदमी की खाल ओढ़े जहाँ-तहाँ खड़े थे। उनमें से कोई एक के चार वसूलने वाला सूदखोर था तो कोई उधार के नाम हर चीज़ के दाम अनाप-शनाप बढ़ाकर बेचने वोला दुकानदार। गनीमत है कि वहाँ ऐसे जो लोग खड़े थे, उनमें हरिया का लेनदार कोई नहीं था। लेकिन उनमें से कौन कब कहाँ प्रकट हो जाएगा, कहना मुश्किल था। हरिया को काले-काले डरावने बादलों से कहीं अधिक डर उन नर-पशुओं से लग रहा था। किसी साथी के मिल जाने की आशा में वह सामने के होटल में घुसकर चाय पीने बैठ गया।

इस कहानी पर अगर कोई टेली-फिल्म बनाई जाए तो क्या उपर्युक्त अंश को शब्दों में यथावत दोहराना होगा? ज़ाहिर है नहीं। इसका मतलब यह है कि उक्त अंश को फिल्म निर्देशक दृश्य के रूप में प्रस्तुत करेगा। लेकिन अगर कहानी में संवाद का प्रयोग होता है तो उन संवादों को तो फिल्म में पात्रों को बोलना होगा। मसलन, इसी कहानी का यह अंश देखिए -

> 'यह कैसी बेईमानी है, माधो भाई?' - हरिया ने प्रतिवाद किया। 'कल ही तो तुमने मेरा हिसाब बताया था - दो सौ सत्तर रुपए!'

'और कल तुमने अपने साथ अपने दो साथियों को पिलवायी थी, सो? उसका हिसाब कौन करेगा?'

'उन्होंने तो अपने पिये का पैसा खुद देने की बात की थी।'

'नहीं वे दोनों भी तुम्हारे नाम पर पीकर गए थे।'

'पर कल मैंने.....हमने इतनी तो नहीं पी थी कि दो सौ सत्तर के चार सौ हो जायें!'

'तुम्हें पीते समय होश नहीं रहता। मेरे हिसाब में कभी गड़बड़ी नहीं होती। लाओ, मेरे चार सौ रुपए दो फटाफट।'

यहाँ दो लोगों के बीच जो बातचीत हो रही है उसे दृश्य माध्यम में भी पेश करना होगा। कहानी के अंदर भी संवाद की भाषा पात्रों के अनुसार लिखी गई है। साथ ही इस बात का ध्यान रखा गया है कि बोलते समय भाषा का जो स्वरूप होता है, संवादों में भी वैसी ही भाषा प्रतिबिंबित हो। इस प्रकार हम दृश्य माध्यमों में प्रयुक्त होने वाली भाषा की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख कर सकते हैं -

- भाषा बोलचाल के अनुरूप हो।
- सरल और सुनकर समझ में आ सके।
- क्लिष्ट और बोलने में कठिनाई उत्पन्न करने वाले शब्दों का इस्तेमाल न किया जाए।
- दृश्य के साथ उसका पूरा तालमेल हो।
- दृश्य कार्यक्रमों के दर्शकों को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग हो।

बोध प्रश्न-2

1) बोलचाल की भाषा में निम्नलिखित में से कौन-कौन से गुणों का होना जरूरी है -

   क) जो सरल और सुनकर समझ में आ सके।

   ख) जिसमें संस्कृत के शब्दों का अधिक प्रयोग हो।

   ग) जिसमें अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग हो।

   घ) जिसमें लंबे और जटिल वाक्य न हों।

   ङ) जिसमें बोलने में कठिनाई उत्पन्न करने वाले शब्दों का प्रयोग न हो।

2) श्रव्य माध्यम की तीन विधाओं का नामोल्लख कीजिए।

   1.

   2.

   3.

3) दृश्य माध्यमों में इस्तेमाल होने वाली भाषा की तीन विशेषताएँ बताइए।

   1.

   2.

   3.

अभ्यास-2

1) निम्नलिखित गद्यांश को बोलचाल की भाषा में परिवर्तित कीजिए -

'अंततोगत्वा चुनाव समाप्त हो गए हैं किंतु यह नहीं प्रतीत होता कि समस्या का समाधान निकल आया है वरन् चुनाव के परिणाम घोषित होने से पूर्व ही सामान्य जन पर डीज़ल की मूल्य वृद्धि द्वारा ऐसा प्रहार किया गया है कि वह अकंपित भाव से सारी स्थिति का अवाक होकर दिग्दर्शन कर रहा है।'

2) हिंदी फिल्मों की भाषा को आप जन माध्यमों के लिए किस हद तक उपयुक्त या अनुपयुक्त मानते हैं और क्यों?

20.4 जनसंचार माध्यमों में भाषा का महत्व

जनसंचार माध्यमों में भाषा का बहुत महत्व होता है। यहाँ तक कि दृश्य माध्यमों में भी भाषा के बिना दृश्यों को समझना मुश्किल हो जाता है। चाहे मुद्रित माध्यम हो या श्रव्य माध्यम - भाषा का प्रयोग करते हुए अत्यंत सावधानी और कुशलता की जरूरत होती है। समाचार-पत्रों में जो भाषा प्रयुक्त होती है, उसे व्यापक जन-समुदाय पढ़ता है। यही बात अन्य माध्यमों पर भी लागू होती है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह देश की संपर्क भाषा है। सिनेमा और टेलीविज़न की वजह से इसका प्रसार-क्षेत्र सारे भारत में है। इसे वे लोग भी सुनते या बोलते हैं जिनकी हिंदी मातृभाषा नहीं है। इसलिए हिंदी का संचार माध्यमों में प्रयोग करते हुए इस बात को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि इसे वे लोग भी सुन रहे हैं जिनका हिंदी ज्ञान अत्यंत सामान्य स्तर का हो सकता है।

जनता की भौगोलिक, शैक्षिक और सामाजिक स्तर की भिन्नताओं को देखते हुए यह जरूरी हो जाता है कि हम संचार माध्यमों में भाषा का प्रयोग रचनात्मक ढंग से करें। अगर इन माध्यमों में प्रयुक्त होने वाली भाषा सहज और सरल नहीं होगी और उसके माध्यम से संदेश के सम्प्रेषित होने में कठिनाई आएगी तो संचार माध्यम अपनी भूमिका निभाने में कामयाब नहीं हो पाएंगे।

संचार माध्यम के स्वरूप के अनुसार भाषा का स्वरूप भी बदलेगा। तीनों माध्यमों में एक तरह की भाषा का प्रयोग नहीं किया जा सकता। इस बात का भी ध्यान रखना होता है कि कार्यक्रम किस विधा में है और उसका विषय क्या है। समाचार में प्रयुक्त होने वाली भाषा लेख या संपादकीय में नहीं प्रयुक्त हो सकती। इसी प्रकार रेडियो में भी वार्ता, समाचार, फीचर, नाटक आदि में अलग-अलग तरह की भाषा का प्रयोग होता है। यही बात टेलीविज़न कार्यक्रमों पर भी लागू होती है।

संचार माध्यमों में लिखित भाषा और बोली जाने वाली भाषा का अंतर समझना जरूरी है। रेडियो और टेलीविज़न पर हमेशा उच्चरित भाषा का प्रयोग होता है। बोली जाने वाली भाषा की विशेषताओं का उल्लेख हम कर चुके हैं। लिखित भाषा के साथ यह सुविधा होती है कि अगर बात एक बार पढ़ने में समझ नहीं आती है तो हम उसे दुबारा पढ़कर समझ सकते हैं। लेकिन रेडियो और टी.वी. पर हमें यह अवसर नहीं मिलता। हमें बात को एक बार में ही पढ़कर समझना होता है। इसके लिए जरूरी है कि इन माध्यमों में प्रयुक्त होने वाली भाषा सरल और सहज-सम्प्रेष्य हो। वाक्य लम्बे न हों। उन शब्दों का प्रयोग करने से बचें जिनका प्रयोग आम तौर पर उच्चरित भाषा में नहीं किया जाता। बोलते हुए उच्चारण की शुद्धता पर खास ध्यान रखें। अशुद्ध उच्चारण से सुनने वालों को बात समझने में कठिनाई महसूस होती है, साथ ही बोलने वाले का प्रभाव भी अच्छा नहीं पड़ता। भाषा की शुद्धता का ध्यान हमें मुद्रित माध्यमों

में भी रखना चाहिए। मात्रा और वर्तनी संबंधी गलतियों से पाठकों पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता। वे यह समझने लगते हैं कि जो भाषा की शुद्धता पर ध्यान नहीं देता, वह अपनी बातों के प्रति भी गंभीर नहीं होता।

20.5 संचार और शिल्प का भाषा पर प्रभाव

प्रत्येक संचार माध्यम का अपना शिल्प होता है। जब हम रेडियो नाटक कहते हैं तो उसका तात्पर्य यह नहीं होता कि वह उसी अर्थ में नाटक है जिस अर्थ में हम रंगमंच पर नाटक देखते हैं। मान लीजिए किसी नाटक के एक दृश्य में एक पात्र खून से लथपथ मंच पर आता है तो वहाँ पर उपस्थित दूसरे पात्रों को यह दोहराने की जरूरत नहीं कि तुम खून से लथपथ हो। लेकिन रेडियो नाटक में अगर यह बात कही नहीं जाएगी तो श्रोताओं को मालूम नहीं पड़ेगा कि एक पात्र खून से लथपथ है। ज़ाहिर है कि इस बात को अत्यंत चतुराई से कहने की जरूरत होती है। यह एक तरह की रचनात्मक चतुराई है जिसमें पात्र बहुत स्वाभाविक ढंग से यह सूचना दे देता है। कहने का तात्पर्य है कि रेडियो माध्यम में उस माध्यम की विशिष्टता ने उसका जो शिल्प विकसित किया है उसी के अनुरूप भाषा का प्रयोग करना होता है।

शिल्प का निर्धारण माध्यम तो करता ही है, विधा और विषय भी करते हैं। समाचार का एक खास तरह का शिल्प होता है लेकिन उसमें विविधता की गुंजाइश लगभग नहीं होती। इसके विपरीत नाटकों और दूसरी रचनात्मक विधाओं में शिल्पगत प्रयोग करने की संभावना कहीं ज्यादा होती है। मुद्रित और श्रव्य माध्यम में जो भी शिल्पगत प्रयोग होते हैं उनमें भाषा की केंद्रीय भूमिका होती है या कहना चाहिए कि भाषा के माध्यम से ही वे प्रयोग सामने आते हैं। लेकिन यह बात दृश्य माध्यमों पर लागू नहीं होती। वहाँ दृश्यों की प्रस्तुति में ही शिल्प के नए प्रयोग निहित होते हैं यद्यपि उसका प्रभाव भाषा पर भी पड़ता है। भाषा वस्तुतः संकेत व्यवस्था है। लेकिन दृश्य माध्यम में यह संकेत व्यवस्था दृश्य हैं जिसके सहायक के रूप में भाषा का प्रयोग होता है। कह सकते हैं कि दृश्य माध्यम में दृश्य और भाषा मिलकर संदेश का अर्थ व्यंजित करते हैं। इसी प्रकार, रेडियो में यह काम भाषा और ध्वनि करते हैं। इसलिए इन माध्यमों में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि संदेश को प्रभावशाली ढंग से व्यंजित करने के लिए दृश्यों और ध्वनियों का प्रयोग किस तरह किया जाना चाहिए। रेडियो में रेल की आवाज़, बस के चलने, गाड़ी के रुकने और चिड़िया के चहचहाने आदि की ध्वनियों का इस्तेमाल करके एक खास तरह का वातावरण तैयार किया जाता है। इसी प्रकार, संगीत का प्रयोग अलग-अलग तरह की भावनाओं की अभिव्यक्ति में सहायक होता है। ऐसी स्थितियों को भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करना उचित नहीं होता। फिल्म और टेलीविज़न में भी दृश्य, संगीत और अन्य तरह की ध्वनियों और चित्रों, रेखांकनों का प्रयोग किया जाता है। वहाँ भी भाषा का प्रयोग इन सब संकेत माध्यमों को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए।

20.6 संचार के लिए लेखन

संचार के लिए लेखन आरंभ करने से पहले हमेशा संचार माध्यमों की प्रकृति को समझ लेना चाहिए। संचार की प्रकृति को समझने का मतलब है कि उस माध्यम की अपनी विशिष्टता को समझना। इसके बाद यह समझने की जरूरत है कि उस माध्यम का भाषा के साथ किस तरह का रिश्ता है। यानी वहाँ की भाषा का प्रयोग लिखित रूप में होना है या उच्चरित रूप में। तीसरा यह कि माध्यम की पहुँच कहाँ तक है, उसे किस तरह के लोग ग्रहण करते हैं और उनकी सामाजिक तथा शैक्षिक स्थिति

क्या है? यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि गंभीर और जटिल बात भी आम आदमी समझ जाता है यदि उसे बात उसकी अपनी भाषा में समझाई जाए। इसके बाद माध्यम में किस तरह की विधा और किस तरह के विषय के लिए लेखन किया जाना है। क्या वह विधा और विषय किसी खास शिल्प की माँग करते हैं? यदि हाँ तो उसके लिए कौन-सी भाषा उपुयक्त होगी? यह सब बातें ध्यान में रखी जाएंगी तो विभिन्न संचार माध्यमों के लिए लेखन आसान होगा।

संचार के लिए लेखन करने के लिए भाषा में दक्षता का होना जरूरी है। यानी आप जिस भाषा में लिख रहे हैं उसका रचनात्मक प्रयोग करने की क्षमता आप में होनी चाहिए। इसके लिए यह भी जरूरी है कि आप इन माध्यमों में प्रयुक्त होने वाली भाषा का ध्यान से अध्ययन करें और उनकी विशेषताओं को नोट करें। इस क्रम से आपको यह भी समझ आने लगेगा कि प्रयुक्त भाषा में क्या कमज़ोरियाँ रह गई हैं, जिससे आपको बचना है। संचार का कोई माध्यम हो - यदि वह व्यापक जन समुदाय के लिए है तो उसमें ऐसी ही भाषा का प्रयोग होना चाहिए जो अधिकाधिक लोगों की समझ में आ सके। इसलिए आपको किताबी भाषा लिखने से बचना चाहिए। सरल भाषा लिखना चुनौती का काम है। ऐसी सरल भाषा जो रचनात्मक गुण से युक्त हो और जिसके द्वारा बात को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया जा सकता हो। इसलिए बल सरल और सहज भाषा पर होना चाहिए न कि साधारण और जटिल भाषा पर।

बोध प्रश्न-3

1) शिल्प की दृष्टि से महत्वपूर्ण विधाओं को क्रम दीजिए।
   - क) वार्ता
   - ख) नाटक
   - ग) फीचर
   - घ) समाचार

2) रेडियो नाटक में भाषा की तीन विशेषताएँ बताइए।
   1)
   2)
   3)

3) निम्नलिखित शब्दों में से कौन-से शब्द श्रव्य और दृश्य माध्यमों के लिए उपयुक्त हैं?
   1) तदुपरांत
   2) किंकर्तव्यविमूढ़
   3) मुनासिब
   4) अधिक
   5) अंततः

अभ्यास-3

1) संचार के लिए लेखन में किन-किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?
2) रेडियो और टी.वी. समाचारों में प्रयुक्त भाषा की तुलना कीजिए।

20.7 सारांश

आपने संचार के लिए लेखन नामक इस इकाई का अध्ययन किया है। उम्मीद है कि आपने इकाई को अच्छी तरह समझ लिया होगा। आप समझ गए होंगे कि संचार से क्या तात्पर्य है। संचार का तात्पर्य है - संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान भेजना। आधुनिक विकास ने संचार के कई नए आविष्कारों को जन्म दिया जिसने मुद्रित, श्रव्य और दृश्य माध्यमों की शुरुआत की। इनमें वैयक्तिक और जन दोनों तरह के माध्यम शामिल हैं। रेडियो, टेलीविज़न, सिनेमा और समाचार-पत्र आदि जन माध्यम हैं तो टेलीफोन, तार, फैक्स, ई.मेल आदि वैयक्तिक माध्यम।

संचार माध्यमों की भाषा वही नहीं होती जो आम तौर पर हम इस्तेमाल करते हैं। हम रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भी लिखते हुए और बोलते हुए भिन्न-भिन्न तरह की भाषा इस्तेमाल करते हैं। संचार माध्यमों में जो भाषा प्रयुक्त होती है वह बोलचाल की भाषा के ज्यादा करीब होती है। लेकिन मुद्रित माध्यमों में और श्रव्य माध्यमों में एक-सी भाषा प्रयुक्त नहीं होती। इसी प्रकार, श्रव्य और दृश्य माध्यम में भाषा अलग-अलग होती है। यह भी ध्यान रखने की जरूरत है कि माध्यम के अलावा विधा और विषय के अनुसार भी भाषा में अंतर आता है। लेकिन किसी भी माध्यम में भाषा का क्यों न उपयोग किया जाए उसमें कुछ सामान्य गुणों का होना जरूरी है। मसलन, भाषा सरल और सहज होनी चाहिए। सुनकर ही समझी जा सके ऐसी होनी चाहिए। भाषा में क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। लंबे और जटिल वाक्य भी संचार माध्यमों की भाषा के लिए उपयुक्त नहीं होते। संचार के लिए लेखन में शिल्प का भी महत्व होता है। भाषा को भी उसके अनुसार रचनात्मक बनाना चाहिए।

20.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

जनसंचार माध्यम : सम्प्रेषण और विकास, देवेन्द्र इस्सर, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली.

जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र, जवरीमल्ल पारख, अनामिका प्रकाशन, दिल्ली.

बोध प्रश्नों और अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) ख और ग

2) रेडियो श्रव्य माध्यम है और टेलीविज़न दृश्य माध्यम।

3) क) टेलीविज़न पर दृश्य बिंब छोटे आकार में दिखाए जाते हैं, सिनेमा में बड़े।

   ख) सिनेमा का प्रयोग कथात्मक और वृत्तचित्रों के लिए होता है जबकि टेलीविज़न पर इनके अलावा समाचार, साक्षात्कार आदि कई तरह के कार्यक्रम दिखाए जा सकते हैं।

बोध प्रश्न-2

1) क) घ) और ङ)

2) 1) वार्ता

   2) समाचार

   3) नाटक

3) 1) भाषा बोलचाल के अनुरूप हो।

2) सरल और सुनकर समझ में आ सके।

3) दृश्य के साथ उसका पूरा तालमेल हो।

बोध प्रश्न-3

1) ख, ग, क, घ

2) 1) सरल और सहज

2) आसानी से उच्चरित शब्दों का प्रयोग

3) छोटे वाक्यों का प्रयोग

3) 3. मुनासिब 4 अधिक

अभ्यासों का उत्तर स्वयं लिखिए और इकाई को ध्यान से पढ़िए।